वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अगस्त 2022

- अपने जीवन का फ़िकर
- देव वाणी और भजन
- गाफ़िल मत रह
- मैं तुम्हारी नहीं
- रूहानी रोशनी के प्रकाश में
- पशु जगत और उसके सम्बन्ध में मनुष्य का कर्तव्य
- खुशी के चार पल
- शुभ संग्राम

इस अंक में

"आत्मानं सततं रक्षेत् ।"

अर्थ – आत्मा की सर्वदा रक्षा करनी चाहिए।

जैसे एक एक शराबी जो नाली में गिरा पड़ा हुआ हो और उसका कोई हितकर्ता उसे ज़ोर - 2 से उठाए और अवाज़े दे कि तुम कहां पड़े हो? तुम्हारा मुंह कुत्ते चाट रहे हैं, उठो घर चलो। कभी कभी होश आने पर वो देखता है और बोलता है कि उठता हूँ, चलता हूँ और फिर कुछ नशा उतरने पर कुछ कदम चलता है और फिर गिर जाता है। हमारा भी बहुत सारे पहलुओं में यही हाल है। एक - 2 नीच अनुराग के बौंदले हुए हम कभी - 2 सभाओं में (उच्च वातावरण में) जागते हैं, कुछ कदम चलते भी हैं और फिर गिर जाते हैं। धर्म जीवन के इस अंक के हमारे पाठक अपने जीवन की इसी बेसुधि के फ़िकर (चिन्ता) के विषय में 'अपने जीवन का फ़िकर लेख पढ़ने का अवसर पाएंगे।

अगस्त मास की 10, 11, 12 तारीख को अपने अस्तित्त्व (शरीर और आत्मा) के संबंध में पाठ और विचार के अंतिम दिन हैं। इस विषय में भगवान देवात्मा की देववाणी और उनका एक संगीत 'ज्ञानी होना ही जो सम्भव'. . . . . पढ़ने का अवसर पाएंगे। यह देववाणी और संगीत देव जीवन से निकले होने के कारण देव ज्योति से भरपुर हैं। 'गाफ़िल मत रह' और 'मैं तुम्हारी नहीं' भगवान के बहुत पुराने लेख हैं, इन दोनों लेखों ने देव समाज के ब्रती कर्मचारी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवन पर विशेष प्रभाव डाला था।

इस अंक में इससे आगे हमारे पाठक श्री पी. वी. कनल जी के एक साधन का हाल पढ़ेंगे और अपने जीवन को भी देव ज्योति में देखने का अवसर लाभ करेंगे।

13 अगस्त से 4 सितम्बर तक पशु जगत के संबंध में दिन हैं। पशु जगत के संबंध में भगवान के दो लेख भगवान देवात्मा की ही पुस्तक 'पशु जगत और उसके संबंध में मनुष्य के कर्तव्य' से लेकर यहाँ दर्ज किये जाते हैं इनमें से एक लेख में पशु जगत की तुलना में मनुष्य की हालत और धर्म की जरूरत पर है और दूसरा पशु जगत के संबंध में मनुष्य के क्या कर्तव्य हैं उसके संबंध में है। दोनों ही लेख अति हितकर हैं।

देव समाज की विविध सामाजिक सभाओं और शुभ संग्रामों को पढ़कर भी हमारे पाठकर हर्ष लाभ करेंगे। धर्म जीवन के इस अंक में पाठक अपने मूल्यवान सुझाव और विचार अवश्य भेजें।

पाठकों की ओर से धर्म जीवन के सारे लेखों को पढ़कर जो लाभ होता है वह फोन द्वारा बताते हैं, परन्तु जुलाई अंक के लेखों की सराहना कई धर्म सम्बन्धियों ने की। एक सेवक ने तो यहाँ तक कह दिया कि एक 2 लेख लाख लाख रुपये का है। इस प्रकार निवेदन है कि आप लोग अपने विचार वट्स ऐप के द्वारा भेजते रहें। आपके द्वारा किसी अलोचना को भी हम खुले दिल से स्वीकार करेंगे। धन्यवाद।

– सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 8
अगस्त 2022
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

अपने जीवन का फ़िकर

साधारण इन्सान अपनी दुनियादारी में सदा व्यस्त रहता है। दरअसल इन्सान के पास मरने के लिए वक्त ही वक्त है और पर अपने भले के लिए कुछ मिनट तक का भी समय नहीं है। इन्सान के पास यह सोचने का वक्त नहीं है कि जो उसे जीवन मिला है उसकी सफलता कहाँ हैं? पहले हमारा बचपन खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई में गुजर जाता है, जवानी शादी, नौकरी ढूंढने, नौकरी करने, और बच्चे पैदा करने में और बुढ़ापा अपने बच्चों को Settle करने में गुज़र जाता है। अपने 'जीवन का फ़िकर उसके चिन्तन का विषय हमारे सिलेबस में है नहीं।

साधारण इन्सान अक्सर यह कहता सुना जाता है कि "मैं बाकी दुनिया से ठीक हूँ। अगर मैं किसी का कोई भला नहीं करता तो किसी का बुरा भी नहीं करता।" परन्तु इस बात में सच्चाई नहीं है। इन्सान किसी को छोड़ो अपनी भी दिन रात हानि ही करता रहता है। हमने यह विचार करना है कि क्या कभी हमने गलत खा खाकर अपने स्वस्थ्य की हानि की है? बेवक्त खा कर स्वास्थ्यनाशक चीज़ें खाकर, बार बार खाकर क्या हमने कभी अपने आपको रोग लगाये हैं? कभी हमने यह जानकर भी कि वह चीज़ से मैं बिमार हो जाता हूँ फिर भी स्वाद के पीछे लगकर खाई है, अगर खाई है, तो हमें अपने जीवन का कोई फ़िकर नहीं है और हम अपनी मौत के खरीददार हैं। हम अपने जीवन के फ़िकर से बेफ़िकर हैं। हम कितनी ही बार बिमार होते हैं और डाक्टरों के पास अपने घर बार लुटाते हैं। काम अनुराग के दास बनकर क्या हमने नीच चिन्ताएं, और क्रियाएं की हैं? अगर की हैं तो हमें अपने जीवन का कोई फ़िकर नहीं है। अगर हम अपना काम खुद नहीं करते, दूसरों से करवाते है, ठीक ठाक नौजवान होकर अपने कार्यों के लिए किसी पर निर्भर हैं और खुद आलसी हैं तो हमें अपने जीवन का कोई फ़िकर नहीं है।

अक्सर हम दूसरों को देखकर कहते हैं कि इस व्यक्ति में बहुत Ego है परन्तु हमें हमारा Ego दिखाई नहीं देता। क्या कभी हमें गुस्सा नहीं आता? क्या कभी हम अपने बड़े से अपने विरुद्ध सुनकर अपने मन में बुड़बुड़ नहीं करते, क्या हमने कभी अपने बड़ों के सामने जुबान नहीं खोली? क्या कभी हम अपने से छोटों पर नहीं बरसे और उन्हें नहीं मारा? अगर किया है तो हम भी Ego के शिकर हैं और

अपने जीवन के फ़िकर से बेफिकर हैं।

अगर हम कोई गलती करते हैं तो पूछने पर हम अपनी गलती छुपाने के लिए झूठ बोलते हैं। यह हम इसलिए करते हैं कि हम नहीं चाहते कि हम किसी के सामने गलत साबित हों, दरअसल जो जितना अहं अनुरागी है वो उतना ही झूठा बनता जाता है। जब हमारी कोई इन्सान तारीफ करे तो हम खुश होते हैं उसे अपना समझते हैं पर जब कोई हमारी निन्दा करे चाहे वो कितनी ही सच्ची ही क्यों न हो हमें बहुत बुरी लगती है। जब हमारी कोई इच्छा पूरी न करे तो भी हम अपने सुख पर चोट खाकर बुड़बुड़ करने लगते है।

अगर हमें कोई अच्छी बात बताए तो भी हम उसके अनुसार नहीं चलते, अपने हिसाब से चलते रहते हैं। एक - 2 बच्चे को कहा कि यह लो पैसे और चीज़ लाकर खा लो तो वह खुश हो जाता है परन्तु अगर उसे कहो कि यह चीज़ तुम्हारे लिए नहीं तो देखो कैसे वो आफत पैदा कर देगा। यह सब लक्षण अहं अनुराग के हैं। हमारे जीवन से क्या हर रोज़ बेजान चीज़ों, पौधों, पशुओं, मनुष्यों, के लिए सेवा निकलती है अगर नहीं तो हम स्वार्थी हैं। अगर निकलती है तो किस भाव से? हम दूसरों से गुस्सा हो जाते हैं, नफरत करने लगते हैं, दूर हो जाते हैं उसका कोई भला नहीं कर सकते। उसकी हानि करने वा करवाने के लिए तैयार हो जाते हैं और कर भी देते हैं। या उसकी हानि की खबर सुनकर खुश होते हैं, सब अहं अनुराग की निशानीयां हैं।

हम अपने आपको सदा ठीक और निर्दोष देखते हैं। दर असल हम अपने जीवन के फिकर से बेफ़िकर हैं।

हम धन के अनुरागी होकर धन को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं। धन कमाने में ही अपना सारा दिन गुजारते हैं। धन को अपने हित का साधन बनाने की बजाए उसे लक्ष्य बनाते हैं। बेशक धन जीवन जीने और अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए आवश्यक है, परन्तु उस धन का लक्ष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के भिन्न परोपकार विषयक काम में खर्च करना भी है। धन को इक्ट्ठा करने, उसे बढ़ाने और बढ़ता हुआ देख देखकर खुश होने और उसे परोपकार में काम अथवा अपनी किसी सच्ची जरूरत पर खर्च करते वक्त दुख मिलने का नाम धन अनुराग है। इस धन अनुराग ने ही सारी दुनिया को पागल बना रखा है और अपने जीवन के फिकर से बेफिकर भी। धन अनुराग हमसे झूठ मरवाता है, चोरी करवाता है। धन बचाने के लिए झूठे बिल तैयार किए जाते हैं। एक 2 संस्था का मालिक थोड़ा धन तनख़्वाह देकर अधिक पर दस्तख़त करवाता है। धन अनुराग मासूम बच्चों को उठाकर बेचकर वा नौजवान लड़कियों का व्यापार करके धन अनुरागी को अन्यापूर्ण कृत्य करने के लिए मजबूर करता है। अहं अनुरागी हमें अपनी बुद्धि, अपने विचार, अपने विश्वास, अपनी रुचि का पक्षपाती बनाता है

अपनी संतान का अनुराग, विशेषकर स्त्री संतान से बढ़कर पुरुष संतान का अनुराग। इस संतान अनुराग के कारण अपनी संतान की हर इच्छा का साथ देना, उनसे अपमान सहकर भी उनके लिए ही अपनी जिन्दगी को भेंट धरना भी अपने जीवन का नाश करना है।

हमारे अस्तित्त्व पर दिन रात उपकार हो रहे हैं। हवा, पानी, सूर्य की रौशनी, पेड़ पौधों की

आक्सीजन, फल, सब्जियां, दवाईयां, अनाज, कपड़े, पशुओं का दूध, उनका Nature में balance बनाना, Pollination करना, साथी इन्सानों द्वारा दिन रात सेवाएं, माता पिता, भाई बहन, देश वासियों, आदि की सेवाएं हम प्रति क्षण पा रहे है कि जिनके बिना हम जिन्दा ही नहीं रह सकते। अगर हम अथाह उपकार पाकर भी कुछ भी बदले में सेवा नहीं करते तो हम अपने जीवन को खो रहे हैं और उसके हित से बेफिकर हैं।

जब हमें कोई महान व्यक्ति महान नहीं दिखाई देता, उसके जैसा बनने की प्रेरणा पैदा नहीं होती, कोई उस जैसी छोटी मोटी गति नहीं निकलती तो हम अपने जीवन के संबंध में बेफिकर हैं। अगर हम किसी मनुष्य, पशु, पौधे, बेजान वस्तु के लिए कुछ नहीं करते सिर्फ अपने लिए जीते हैं किसी का दुख दर्द हमें दिखाई नहीं देता तो हम जीवन के हित से बेसुध हैं।

अगर हमें अपना कोई नीच जीवन दिखाई नहीं देता, हम अपने आपको सदा ठीक समझकर जीवन व्यतीत करते हैं। तो हम घोर अंधकार के जीव हैं।

दरअसल हम अपने जीवन के लिहाज से बेसुध, बेध्यान, बौखलाए हुए और पागल हैं।

प्र० अपने जीवन का फ़िकर कैसे पैदा हो?

उ० अपने जीवन के संबंध में सच्चा फ़िकर पैदा करने के लिए सबसे पहले उच्च वातावरण के उच्च प्रभावों की जरूरत है। अगर किसी व्यक्ति ने स्वाद अनुराग से रक्षा पानी हो तो वे ऐसे जनों की उच्च संगत में रहे जो उससे बचे हुए हों। किसी ने अगर अहँ अनुराग से रक्षा पानी हो तो उन जनों की संगत करे कि जो उससे खुद बचे हुए हों वा बचने के संग्राम में लगे हुए हों। अगर किसी ने श्रद्धा भाव, कृतज्ञता भाव आदि उच्च भाव पैदा करने हों तो उसे वैसे ही उच्च जनों की संगत करनी चाहिए। उसे उन पुस्तकों का पाठ करना चाहिए कि जिनमें उन विषयों के बारे में उच्च आत्माओं के लेख और गीत आदि दर्ज हों। उसे उन नीच आत्माओं की संगत से अपनी रक्षा करनी चाहिए जो किसी नीच भाव को बढ़ाने वा प्रेरित करते हों। सबसे जरुरी साधन यह है कि वह परम पूजनीय भगवान देवात्मा से उनकी देव ज्योति और देव तेज के लिए सरल भाव से प्रार्थना करें और उस देव ज्योति में अपने नीच जीवन के प्रत्येक कोष की धीरे - 2 लगातार पड़ताल करें और भगवान के देव तेज को प्राप्त करके सच्चे शुद्धि विषयक त्याग और साधन ग्रहण करें। यही सच्ची मोक्ष का मार्ग है।

- गौतम गानियाना

कुछ आत्मा का फ़िकर कर.....

कुछ सोच वक्त है जा रहा, तेरा कूच निकट है आ रहा
क्यों है वृथा जन्म गंवा रहा, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

सुबह होके होती शाम है, यूं ही होती उमर तमाम है,
पीता नीच सुखों के जाम है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

दुनियां से तुझको प्यार है, सुख स्वाद तेरा दिलदार है,
चाहे होता उसमें ख़वार है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

बीवी और जिन बच्चों में ग़लतान हैं, अपनत्व पर तू कूर्बान है,
सन्मुख तेरे धन मान है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

यह तेरा जो घर बार है, मालो जर का जो अम्बार है,
यह साथ तेरे दिन चार है, कुछ आत्मा का फ़िकर कर।

अब छोड़ नीच अनुरागों को, कर ग्रहण ज़रूरी त्यागों को,
कर विकसित उच्च अनुरागों को, कुछ आत्मा का फिर कर।

भगवान देवात्मा की देव वाणी

सत्य धर्म के अद्वितीय शिक्षक भगवान् देवात्मा मनुष्य की आत्मिक अन्धता के विषय में अपनी देव वाणी का इस प्रकार प्रकाश करते हैं :-

"यह सत्य याद रखना चाहिए, कि यद्यपि मनुष्य में उसकी उत्पत्ति के दिन से ही सुख के लिए अनुराग उत्पन्न हो जाता है, तथापि वह अपने आत्मा की सच्ची गठन और उसके शुभ के सम्बन्ध में न केवल अन्धकार वा अज्ञान की हालत में होता है, किन्तु अपनी इस आत्मिक अन्धता के कारण अपने उस शरीर के सम्बन्ध में भी कि जिसे वह अपनी आँखों से देखता है, उस के शुभ की तरफ से कितनी सूरतों से अज्ञानी वा अबोधी रहता है। इससे भी बढ़कर एक 2 जन यह जान कर भी कि अमुक 2 सुख की तृप्ति चाहने से उसके शरीर को इस वा उस प्रकार की हानि पहुँचती है, फिर भी सुख की गुलामी के कारण उस हानि के कुबूल करने के लिए अपने आप को लाचार अनुभव करता है। और अपने भीतर यही प्रेरणा अनुभव करता है, कि चाहे कैसी ही हानि क्यों न हो, यह सुख ज़रूर लाभ करना है।

स्वास्तित्व ब्रत पर भगवान की बहुत हितकर देववाणी। 15 अगस्त 1905 ई०

तुम्हारा अस्तित्त्व स्वप्न नहीं, किन्तु सत्य है। इसके बिगड़ने और बनने अर्थात विकास और विनाश संबंधी नियम भी अटल हैं। विनाशकारी और विकासकारी गतियां भी सत्य है। विनाशकारी गतियों के अधीन रहकर जैसे तुम अपने अस्तित्त्व की रक्षा नहीं कर सकते, वैसे ही किसी अपने जैसे और अस्तित्त्व की रक्षा भी नहीं कर सकते। विनाशकारी गतियों से निकलने और विकास लाभ करने के लिए तुम्हें अपने अस्तित्त्व के विषय में उन दुर्लभ सत्यों और ज्योति और विविध शक्तियों के लाभ करने की आवश्यकता है, कि जो देव धर्म प्रवर्त्तक के देव जीवन में आविर्भूत हुई हैं। हित अहित के सच्चे विवेक के बिना अपने अस्तित्त्व की रक्षा के लिए आकांक्षा नहीं हो सकती। ऐसा हो कि यह विवेक और आकांक्षा तुम्हारे भीतर जाग्रत वा उन्नत हो।

स्वास्तित्व के सम्बन्ध में

ज्ञानी होना हो जो सम्भव, अपने को पहचानेंगे;
अपने प्रति अज्ञानी रहकर, ज्ञानी नहीं कहलाएंगे। 1
क्या है यह अस्तित्त्व अपना, जो बदलता रात दिन;
किस गति की दिग है जाता, तत्त्व उस का जानेंगे। 2
हो यह जीवन नष्ट कब, कैसे बचे पाए विकास;
सत्य जो-जो इस विषय में, इन की शिक्षा पाएंगे। 3
देह क्या और आत्मा क्या, उनमें हैं सम्बन्ध क्या,
मुक्ष्य लक्ष्य और गौण क्या, यह तत्त्व सम्मुख लाएंगे। 4
जिस से हो जीवन की रक्षा, उच्च हो उसकी गति,
मुख्य होवे लक्ष्य पूरा, ऐसी इच्छा धारेंगे। 5
जिन की ज्योति शक्ति पाकर, मोक्ष हो, पावें विकास,
उनकी भक्ति करे सच्ची, उच्च बनना चाहेंगे। 6

गाफिल मत रह

"हे मनुष्य, तू केवल शरीर नहीं, तू आत्मा है। तेरा यह स्थूल शरीर एक दिन छिन्न भिन्न हो जाएगा। शारीरिक सुखों के लाभ करने में ही तू अपनी उम्र बर्बाद न कर, क्योंकि जैसा तेरा यह शरीर यहां का यहां ही रह जाएगा, वैसे ही उसके सुख के विषय भी यहीं के यहीं रह जाएंगे। यहां से कूच करते समय उनमें से तेरा साथ कुछ नहीं जाएगा। फिर तू आप ही सोच कि ऐसी सौदागरी से क्या लाभ होगा। यदि तू किसी दूसरे देश में धन कमाने के लिये गया हो और रात दिन सख्त मेहनत करके तूने जिस कदर धन कमाया हो, वह यदि उस देश के कानून के अनुसार, जिस समय तू उस देश से अपने घर को जाने लगे, तो सब कुछ तुझ से छीन लिया जाये, तो तू आप ही बतला कि तेरे दिल पर कैसा सदमा लगेगा। क्या उस समय तेरी छाती फट नहीं जाएगी और क्या तू उस समय रो कर यह नहीं कह उठेगा कि लो! अगर मैं जानता कि मेरी सारी उम्र की कमाई आखिरकार मुझ से यूं हाथों हाथ छिन जाएगी, तो क्यों ऐसी सख्त तकलीफ उठाता और क्यों रात दिन उसी के इकट्ठा करने में उम्र बर्बाद करता? आँख खोलकर देख ले, इस दुनियां में दुनयवी दौलत की सौदागरी का यही हाल है। तू जिस कदर यहाँ की दौलत कमाता है, वह यहाँ के कानून के अनुसार इस दुनियां से कूच करते समय यहीं की यहीं छोड़नी पड़ेगी। देख तुझ से पहले जितने लोग आज तक इस दुनिया से कूच कर गये हैं, उनके साथ क्या बर्ताव होता रहा है। फिर यह सब कुछ देख सुनकर भी क्यों अन्धा और बहरा बनता है। अब भी मौका है, होश कर और इस दुनिया का कीड़ा मत बन। उस सच्ची आत्मिक दौलत के कमाने का भी फिक्र कर, जो तेरे यहां भी काम आएगी और वहां भी तुझे आराम देगी, और यहाँ से कूच करते समय तेरे साथ भी जाएगी, तब मुबारिक है वह जन जो मनुष्य जन्म पाकर आत्मिक दौलत के कमाने में गफ़लता नहीं करते और यहां से कूच करते समय वृथा अपनी उम्र बर्बाद करके रोते नहीं देखे जाते, किन्तु दिली शान्ति और तसल्ली के साथ यहां से रवाना होते हैं।"

मैं तुम्हारी नहीं

इस दुनिया में मनुष्य के लिये आखिर कार एक दिन ऐसा समय आ जाता है कि जब सचमुच दुनियां को सारी उम्मीदें टूट जाती हैं और भीतर और बाहर चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता है।

कोई यार, कोई मददगार नज़र नहीं आता। देखने को दुनियां आदमियों से भरी पड़ी है - भाई हैं, दोस्त हैं, बीवी है, बच्चे हैं - तो भी कोई अपना नहीं। किसी से मदद की उम्मीद नहीं रहती। गोया सारी दुनियां जवाब दे देती हैं। जो चीज़ सामने आती है, उसी पर यह शब्द मोटे अक्षरों में लिखे मिलते हैं, "मैं तुम्हारी नहीं"। कैसी ख़ौफनाक हालत! पहले सैंकड़ों चीज़ों पर भरोसा था, इसलिए उम्मीद बन्धी हुई थी, परन्तु थोड़ी सी देर में यह निराशा और सहारा न रहना, सारी चीज़ों का मुँह मोड़ लेना, एक दम से किनारा कर लेना, कैसा दुखदाई है? वह बार बार उन चीज़ों की तरफ देखता है और समझता है कि शायद यह धोखा नहीं देती हैं, मैं खुद ही धोखा खाता हूं। भला अपनी चीज़ें बेगानी किस तरह हो सकती हैं। दस वर्ष, बीस वर्ष जिन चीज़ों को अपना समझता रहा हूँ एक पल के भीतर यह सब पराई क्योंकर हो सकती हैं? मैं शायद ख्वाब देखता हूँ। मेरी अक्ल शायद ठिकाने नहीं है। यह सोचकर फिर हर चीज़ के नज़दीक जाता है और बहुत तवज्जोह से हर एक चीज़ की तरफ नज़र डालता है मगर देखता क्या है, वचन वहीं हैं, शब्द नहीं हैं, "मैं तुम्हारी नहीं, जाओ, जाओ मैं तुम्हारी नहीं। क्या खोफनाक जवाब मिलता है क्या दिल को तोड़ने वाली आवाज़ें निकलती हैं। कोई चीज़ सहारा नहीं देती। किसी जगह शान्ति नहीं मिलती। कैसा अन्धेरा! कैसी घबराहट! कैसी बेचैनी!! सारी उम्मीद टूट जाती है। जिन्दगी बबाल मालूम होती है। अपने आपको लानत करता है, धिक्कारता है। कहता है, काश मैं पैदा न होता। काश कि इस दुनिया में न आता। काश कि मैं जिन्दगी हासिल न करता? यह जिन्दगी नहीं मौत है, मौत से बदतर है। बाहर से निराशा, भीतर से निराशा। बाहर से दुनिया की हर एक चीज़ जवाब देती है भीतर से पाप की आग दिल को जलाती है। हाय! शारीरिक सुखों के लिये दुनिया का गुलाम होना कैसा दुखदाई है?

देव समाज के आगामी पाठ और विचार के साधन

- 10, 11, 12 अगस्त 2022 को स्वास्तित्त्व के संबंध में विशेष दिन है। देव समाज के सामाजिक जन इन दिनों में देव शास्त्र खंड 4 से इस संबंध में आदेशों का पाठ और विचार करें, भगवान देवात्मा के लेख और उपदेश भाग 2 से स्वास्तित्त्व के सम्बन्ध में उपदेश का पाठ और विचार पूर्वक अध्ययन करें।
- 13 अगस्त से 4 सितम्बर तक पशु जगत के संबंध में पाठ और विचार के दिन है। इन दिनों अपने हितकर पशुओं की विशेष सेवा करनी चाहिए, जिन जिन पशुओं से आपने पहले सेवा पाई हो उन्हें विशेष रूप से स्मरण करना चाहिए। हम सब मनुष्य पशुओं से ही आए हैं इस लिए उनका हमें विशेष रूप से कृतज्ञ होना चाहिए।

रूहानी रोशनी के प्रकाश में

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध में चार महा तत्त्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता हूँ। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है आत्मा की उल्टी दृष्टि। इसका फल उतना ही महा भयानक है। इस प्रकार के खुद तजरूबे में अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूँ।

1. **माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि** मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिताजी का देहांत हो गया था। मेरी माता जी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। वह यह था कि जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता तो मैं यह समझा करता कि मैं अपनी माता पर ऐहसान कर रहा हूँ। आपकी रौशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना गलत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। मुझे आपने एक भयानक उलटी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारा रास्ता मैं उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बुड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा करके लोगों की नज़रों में छोटा बन जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उलटी दृष्टि थी। आपकी रौशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आँखें मेरी ओर लगी हुई हैं, मानों दुनियां को अन्य कोई काम ही नहीं। और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप तो नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियादारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से - माता की भी सहायता न करूं।

2. **अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि** जिस संगत में मैं रहता था उसने मुझे यह सिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में था तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे यह अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दखल दें, उसे उसका मज़ा चखाएं। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना था उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद

कालिजिढट की निशानी है। अपने दिनों में मैंने भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरूद्ध हरकतें की और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान है और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूँ जब मैं ऐसे विषाक्त प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने अपमान किया था, उनमें एक वहाँ आए जहाँ मैं पढ़ता था। तब मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा सामर्थ्य के अनुसार परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

3. **आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताए** जब मेरे अहंकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई साहिब भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह 1905 ई० की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मैं उलट पुलट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं गलत जा रहा था, परन्तु मैंने उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

4. **अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास** जब मैं अपना पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार, और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूँ। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाईटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक

अपने दोषों को देखने, और देखने पर उन्हें मान लेने के अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बढ़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधिकारी न भी हूँ। कैसी उल्टी दृष्टि!

5. **झूठा दिखावा** मेरे प्रान्त के बहुत से विद्यार्थी जब कभी अपने प्रान्त से बाहर जाते, तो अमीरों की न्याई ठाठ बाठ से पहनते, खाना खाते और रहते सहते, चाहे उस फिजूलखर्ची के कारण मां बाप को दुखी दिन ओर बेचैन रातें काटनी पड़ती। हमारे रहन सहन को देख कर वहां के विद्यार्थियों पर यह प्रभाव पड़ता कि यह राजकुमार हैं। हम अपने आपको बहुत बड़ा प्रगट करते। हमारे प्रान्त के एक भद्र पुरुष, जो कि प्रान्त के मुख्य नगर में रहते थे, हमारी ऐसी दशा को देख कर बड़े दुखी और निराश हुए और उन्होंने हमारा असली रूप दिखाते हुए एक पत्र अंग्रेजी दैनिक अखबार को लिखा। झूठी और बनावटी पोजीशन बनाए रखने की हानियों से बचाने की उनकी कोशिश का धन्यवाद करने के स्थान पर मैंने और दूसरे विद्यार्थियों ने उन्हें बुरा भला कहा और उन पर झूठे इलज़ाम लगाए।

आपकी ज्योति ने इस सम्बन्ध में मेरे दृष्टिकोण को बहुत बदल दिया है। और आपकी शक्ति से मैं किसी सीमा तक दूसरों के सामने अपने आपको झूठ मूठ बढ़िया दिखाने की आदत को छोड़ने के योग्य हो गया हूँ।

एक दिन मैं जिला मैजिस्ट्रट जो देव समाज के सम्पर्क से प्राप्त उच्च चरित के कारण मेरा बड़ा मान करते थे -के सामने आ गया। उसने मुझे कहा कि तुम्हारी आय प्रति मास कम से कम एक हज़ार रुपए तो होगी। यह बात ठीक न थी। मैं आपके विकासकारी प्रभावों के अधीन आ चुका था, इसलिए मैं वहं और उसी समय बताए बिन न रह सका कि ऐसा नहीं है। परन्तु जब मैंने अपनी आत्म-परीक्षा की तो मैंने देखा कि उसका ऊँचा अनुमान चाहे गलत था, परन्तु मुझे ऐसा सुनना सुखदायक लगा और उसे गलत बताने के लिए मुझे ज़ोर लगाना पड़ा।

मेरे सामने एक भारी सच्चाई प्रगट हुई। एक बात बिलकुल झूठी थी, इसने मुझे खुश किया, क्योंकि उससे मेरे प्रशंसा अनुराग की तृप्ति हुई। और जब मैंने इसे ठीक किया और मैं सच्चाई पर चल रहा था, तो मुझे इसके लिए दिल पर ज़ोर देना पड़ा। कैसी उल्टी दृष्टि!

6. **जीवन के लक्ष्य के विषय में उल्टी दृष्टि** उल्टी दृष्टि की सबसे भयानव अवस्था जो मुझे आपकी रोशनी में दिखाई देती है, वह यह है कि मनुष्य गौण या साधन मात्र बनने वाली वस्तुओं को मुख्य वस्तु समझे और उन्हीं को अपने जीवन का लक्ष्य माने। आपकी ज्योति इस बात को स्पष्ट रूप से दिखाती है, कि धन तभी लाभदायक हो सकता है जब हम इसे भलाई और विकास में सहायक बना सकें। अन्यथा यदि हम उसे ही अपना लक्ष्य समझकर उसके पीछे दौड़ेंगे, तो यह हमें अपना दास बना लेगा और हमारा पतन करेगा। मेरे सन्मुख अनेक मनुष्यों के कुछ देव समाज के सभासदों के भी दृष्टान्त हैं जो आपकी ज्योति से वंचित हैं और जो धन को केवल धन के लिए प्यार करते और कीमती समझते हैं। उन्हें इसकी प्राप्ति से वही सुख मिलता है, जो एक शराबी को शराब का

एक के बाद दूसरा प्याला चढ़ाकर मिलता है। उन्माद की अवस्था उन्हें बहुत अच्छी लगती है, यद्यपि उनके पास पहले ही शेष सारे जीवन को इज्जत से निर्वाह करने के लिए काफी धन है, परन्तु वह उसके नशे को तोड़ नहीं सकते। यदि वह धन दौलत की सनक छोड़ दें, और अपने आत्मा की भलाई का फिक्र करें, तो वह अपने और दूसरों के लिए बहुत हितकर प्रमाणित हो सकते हैं। परन्तु वह तब तक ऐसा नहीं कर सकते, जब तक आपकी ज्योति और शक्ति उनके भीतर प्रवेश करने का अवसर पाकर, इस अंग में भी उनके भीतर शुभ परिवर्तन नहीं ला देती, जैसा कि उनके जीवन के अन्य अंगों में उच्च परिवर्तन आया है।

वह आत्मा जो आपके देव प्रभावों के द्वारा इस धन-मोह से उद्धार पा चुके हैं, जानते हैं कि एक समय था जब वह इस भयानक उल्टी दृष्टि के शिकार थे।

एक बड़े खानदान का एक नौजवान ग्रेजुएट डाक्टर बनना चाहता था। जब उसे डाक्टर बनने का कारण पूछा गया, तो उसने कहा, "इसलिए कि लोग मेरी एक मूर्ति नगर के एक गेट के नज़दीक खड़ी करें।" उससे प्रश्न किया गया कि लोग तुम्हारा बुत क्यों बनाएं? उसने उत्तर दिया कि मैं लोगों की सेवा करूंगा और दान दूंगा।

यह उल्टी दृष्टि की एक विचित्र घटना हैं वह लोगों में नाम पाने के लिए दूसरों की सेवा करना और धन कमाना चाहता था। जीवन के लक्ष्य के विषय में कैसी उल्टी दृष्टि!

परन्तु आपकी शक्ति ने उसे बदल दिया और उसने धन कमाने वाले सब काम छोड़ दिए और अब वह वर्षों से देव समाज में मिशनरी के रूप में काम कर रहा है।

इस अंग में मेरी अपनी उल्टी दृष्टि भी बड़ी सीमा तक दूर हो गई है। मैंने भी हर अच्छे या बुरे ढ़ग से धन इकट्ठा करना अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था, ताकि मैं ऊँचे सामाजिक सम्बन्ध और सांसारिक पदवी प्राप्त कर सकूं। जीवन के बारे में कैसा अन्धकार और कितना क्षुद्र लक्ष्य! आपने अपने देव प्रभाव संचार करके मेरी दृष्टि बदलने और मुझे बचाने की कृपा की।

आपकी महान ज्योति में मैं देखता हूं कि मुझे उल्टी दृष्टि से बचाने के लिए आपकी देव ज्योति और आपके देव तेज से बढ़कर कोई चीज़ कारगर नहीं। दूसरे शब्दों में मेरी दृष्टि ठीक रखने के लिए आपके देव प्रभावों से बढ़कर किसी चीज़ पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मुझे कड़वा तजरुबा है कि जब मैं अपने ऊपर निर्भर करता हूँ तो मेरी दृष्टि उल्टी हो जाती है और मैं जीवन का उच्च मार्ग देखने के अयोग्य हो जाता हूँ। उच्च जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को देखने और उस पर चलने के बिना मैं सुरक्षित नहीं। मैं महसूस करता हूँ कि जब मेरे हृदय पर आपका सबसे बढ़कर अधिकार होगा और केवल आपके देव रूप की ओर मेरा दिल आकृष्ट होगा, तब मेरी जीवन यात्रा सबसे बढ़कर सफल होगी।

काश! यह अति कंगाल और तुच्छ हृदय आपके अद्वितीय देव प्रभावों को ग्रहण करें और इस संसार के पतनकारी प्रभावों से अपनी रक्षा कर सकें।

(पी. वी. कनल)

पशु जगत और उसके सम्बन्ध में मनुष्य के कर्तव्य

(परम पूजनीय भगवान देवात्मा द्वारा लिखित)

नाना पशुओं के साथ नाना मनुष्यों की तुलना।

पशु - जगत् से ही मनुष्य की उत्पत्ति हुई है। शिम्पान्जी आदि वानरों और मनुष्य के पूर्वज एक ही थे। मनुष्य आकार में उन्नत शील बुद्धि और वाक़ शक्ति के विकसित हो जाने से उसकी और सब पशुओं की अपेक्षा विशेषता हो गई। परन्तु कई वंश के अन्य पशुओं में भी धीरे - धीरे कई प्रकार की ऐसी क्षमताएँ उत्पन्न वा उन्नत हुई, कि जो मनुष्य में नहीं हुई, यथा, सील और भालुकी (रीछनी) आदि कई प्रकार के जीव कई - कई महीने तक बिना आहार के जी सकते हैं, परन्तु मनुष्य नहीं जी सकता। भेड़ों और बकरियों की खाल पर जिस प्रकार की ऊन और पशम उगती है, वह मनुष्य की खाल पर से नहीं निकलती। घोड़े और हिरन आदि कई प्रकार के पशु जितना तेज़ दौड़ सकते हैं, उतना मनुष्य नहीं दौड़ सकता। चील, और गिद्ध आदि अपनी आँखों से जितनी दूर की चीज़ देख सकते हैं, उतनी दूर की चीज़ मनुष्य नहीं देख सकता। कुत्तें में जैसे तेज़ घ्राण शक्ति पाई जाती है, वह मनुष्य में नहीं - कुत्ते का मालिक अथवा उसका कोई शिकार जिस रास्ते पर से गया हो, उस पर उसकी छोड़ी हुई सूक्ष्म गन्ध को सूँघकर वह उसका पता निकाल लेता है, परन्तु मनुष्य नहीं निकाल सकता। किसी कबूतर की आँखें बन्द करके सैकड़ों मील ले जाकर उसके छोड़ देने पर वह जिस प्रकार अपने परिचित वास स्थान का पता निकालकर वहाँ फिर वापिस आ जाता है, उस प्रकार मनुष्य नहीं आ सकता। फिर उन्नतशील बुद्धि और वाक् शक्ति को पाकर यद्यपि मनुष्यों में से सैकड़ों जनों ने विद्या, विज्ञान, शिल्प और अन्य कला कौशलों में अत्यन्त आश्चर्यजनक उन्नति की है, तथापि इन्हीं शक्तियों के द्वारा लाखों मनुष्यों ने क्या अपने सदृश्य अन्य मनुष्यों और क्या अन्य पशुओं के सम्बन्ध में छल, कपट, मारण, उच्चाटन, अपहरण और अत्याचार आदि पाप और अपराध मूलक जिस - जिस प्रकार की विधियाँ निकाली हैं, वह किसी पशु के स्वप्न में भी नहीं आ सकती। हज़ारों स्वार्थ परायण मनुष्य अपनी सन्तान के पालन में लड़के और लड़की का प्रभेद रखकर जिस प्रकार का अनुचित पक्षपात करते हैं, वह पशुओं में कहाँ है? हज़ारों अधम लोग अपने घरों में कन्याओं के उत्पन्न होने पर जिस प्रकार शोक करते हैं, और अवसर पाकर उसी समय उनको वध कर देते हैं, अथवा किसी रोग के समय उनकी उचित चिकित्सा और शुश्रूषा न करके उन्हें जान बूझकर मरने देते हैं, उस प्रकार की अधम क्रिया शेर जैसे हिंसक पशुओं में भी कहाँ पाई जाती हैं? एक - एक गधा हज़ारों आदमियों की तुलना में बेशक बेवकूफ होता है, परन्तु कितने ही बुद्धिमान् न्यायाधीश, कितने ही जन औरों की जान और माल के रक्षक और कितने ही अन्य लोग जिस प्रकार औरों से रिश्वतें (उत्कोच) लेते हैं, दूसरों पर जुल्म करके उनका माल वा धन छीनते हैं, उस

प्रकार गधा कौन सी क्रिया करता है? एक - एक कुत्ता अपने आपको जिस प्रकार प्रभु - भक्त और अपने मालिक के लिए विश्वासी व वफादार प्रमाणित करता है, उस प्रकार हज़ारों मनुष्य कहाँ प्रमाणित करते है? मादक द्रव्यों का सेवन करके हज़ारों मनुष्य जिस प्रकार नाना अपराध करते हैं, रोग उत्पन्न करके अपनी स्वास्थ्य का नाश करते हैं और अनेक बार अकाल वा अपमृत्यु को प्राप्त होते हैं उस प्रकार पशु कहाँ करते हैं? लाखों मनुष्य अपने किसी अपराध वा पाप के छिपाने वा उसके दण्ड से बचने के लिए जिस प्रकार के झूठ और फरेब घड़ते हैं, धन और सम्पत्ति आदि की प्राप्ति के लिए तरह - तरह के जाल बनाते हैं, उस प्रकार की क्रियाएँ पशुओं में कहाँ है? माँ के दूध की तरह किसी गौ वा बकरी के दूध को पीकर जिन मनुष्यों ने अपने शरीर का पालन किया हो, और मातृहीन वा रोगी होने पर ऐसे ही पशुओं के दूध से परवरिश पाई हो, उनमें से जो जन अपनी इन्हीं हितकारी पशुओं के बच्चों का वध करके वा कराके अपनी महा घृणित कृतघ्नता का प्रकाश करते हैं, वह कृतघ्नता ऐसे पशुओं में कहाँ है? अनुचित प्रतिशोध से उत्तेजित होकर हज़ारों कुटिल जन जिस - जिस प्रकार से अपने हितकर्ताओं को हानि पहुँचाते हैं, उसका दृष्टान्त भेड़ और बकरियों जैसे सुशील पशुओं में कहाँ है? कितने ही विद्वान डाक्टर रुपया लेकर जिस प्रकार भ्रूण - हत्या कराते हैं और कितने ही विद्वान् वकील रुपया लेकर अपने मुवक्किलों को किसी सच्चे अपराध के दण्ड से बच जाने के निमित्त जिस प्रकार की झूठी विधियाँ सुझाते हैं, दल्लालों की मारफत कितने ही भोले भाले गरीब लोगों को काबू करते है, उस प्रकार मूर्ख पशु कौन - सी क्रिया करते हैं? इसलिए यदि यह सच हो कि

"विद्या विहीना पशुभिः समानाः"

अर्थात् विद्या विहीन मनुष्य पशु की न्याईं होता है, तो साथ ही उसके यह भी सच है कि

धर्मेण हीनाः पशुभ्यो निकृष्टाः

अर्थात् धर्म शक्तियों से विहीन मनुष्य अपने आचरणों के विचार से पशुओं से भी निकृष्ट होता है।

पशुओं के सम्बन्ध में मनुष्यों के नाना कर्तव्य

मनुष्य जगत् में जो जन औरों की अपेक्षा जितने अंश कोई श्रेष्ठ भाव वा श्रेष्ठ प्रकृति रखते हैं, उतने ही अंश वह क्या मनुष्य और क्या पशु वा अन्य अस्तित्त्वों के सम्बन्ध में अपने श्रेष्ठ वा अच्छे आचरण का प्रकाश करते हैं। जिसके आँखें नहीं है, जैसे वह किसी के उपदेश से किसी छवि के सौन्दर्य को देख नहीं सकता, वैसे ही जिन आत्माओं के भीतर किसी अस्तित्त्व के सम्बन्ध में अपनी किसी नीच गति के देखने के लिए कोई आन्तरिक शक्ति नहीं है, अथवा बीजरूप में शक्ति तो है परन्तु उसे उज्जवल करने और उस के सन्मुख किसी हितकर तत्व के लाने के लिए कोई अनुकूल घटना वा सम्बन्धी प्राप्त नहीं हैं, वह उस नीच गति के हानिकारक और घृणित रूप को नहीं देखते और उससे उद्धार के लिए कोई आकांक्षा भी नहीं करते, किन्तु उल्टा उनका साथ देते हैं, और उसी की ओर औरों को भी ले जाते हैं। परन्तु जिनकी अवस्था ऐसी नहीं है वह उनके विपरीत

एक वा दूसरी नीचगति दायक क्रिया से या तो पहले से ही बचे हुए होते है, या उसके विषय में किसी सत्य ज्योति के मिलने पर उससे उद्धार पाने के आकांक्षी बन जाते हैं। और अपने भीतर यथेष्ट बल रखने पर उसे या तो अपने आप त्याग देते हैं, या यथा अवसर किसी और से बल पाकर उससे मुक्त होना चाहते हैं। यही पिछले वह लोग हैं, कि जिन तक यदि हमारी यह पुस्तक पहुँचे, और वह उसे पाठ करें, तो उनमें से कितने ही जन पशु जगत् के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्यों को अनुभव कर सकते हैं और इससे पहले के परिच्छेद में जिन-जिन दुराचारों वा पापों का उललेख किया गया है, उनमें से सब वा किसी पाप को अपने आचरण में देखकर उसे परित्याग करने के लिए प्रस्तुत हो सकते हैं। ऐसे ही जनों से हम अपने इस परिच्छेद में पशुओं के सम्बन्ध में अपने-अपने कर्तव्य पालने के लिए अपील करते हैं। हे मनुष्य नामधारियों! तुम अपने-अपने आश्रित और अन्य नाना पशुओं की ओर दृष्टि करो। देखो, वह तुम्हारे बल की तुलना में कैसे हीन हैं। तुम उनकी अपेक्षा सबल हो और वह तुम्हारी अपेक्षा निर्बल हैं। वह तुम्हारी भाषा में तुम्हारे वा तुम्हारी किसी अदालत के सन्मुख तुम्हारे किसी अन्याय वा अत्याचार की कोई नालिश वा फरयाद नहीं कर सकते!! यदि तुम्हीं उनके प्रति अपने अत्याचार वा अन्याय वा पाप की परवाह न, यदि तुम्हीं उनके दुखदर्द को अनुभव न करो, यदि तुम्हीं उनके सच्चे अधिकार को उपलब्ध न करो, यदि तुम्हीं सबल होकर उन निर्बलों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य न समझो, यदि तुम्हीं उन्हें आश्रय देकर फिर उनकी रक्षा करना मनुष्यता न जानो, यदि तुम्हीं अपने किसी पुराने स्वभाव वा मिथ्या विश्वास के वश होकर उनके अधिकार की ओर से अपने हृदय को कठोर कर लो, यदि तुम्हीं दया के श्रेष्ठ भाव का कोई सन्मान न करो, यदि तुम्हीं हिंसक पशुओं का अनुकरण करो, तो फिर तुम्हीं बताओ, कि वह असहाय लाखों जीवन अपनी रक्षा और अपने साथ भले सलूक के लिए और किससे आशा कर सकते हैं। ओह! ऐसा हो, कि तुम अधिकार (हक) के जिस पवित्र शब्द को उच्चारण करते हो, उनके सच्चे अर्थों को समझकर बिना पक्षपात के उसका उन जीवों के साथ भी प्रयोग करो, कि जो तुम्हारी जाति की उत्पत्ति से पहले प्रगट हुए हैं, और जो इसलिए तुम्हारे पूर्वज हैं और जिन में से कितने ही तुम्हारे नाना प्रकार से हितकारी वा सेवाकारी भी हैं।

किसी विकास प्रिय मनुष्य के लिए केवल यही आवश्यक नहीं कि वह पशुओं के सम्बन्ध में उपरोक्त सब प्रकार के दुराचारों से विरत रहे, किन्तु अपनी सामर्थ्य के अनुसार जहाँ तक सम्भव हो, उनके भले के लिए भी एक वा दूसरे प्रकार के कर्तव्य कर्मों का पालन करे। यथा :

1 प्रतिदिन अपने आहर के समय उसमें से कुछ भाग शुभ संकल्प के साथ सेवाकारी पशुओं के लिए निकालना।

2 पशुओं के पीने के लिए किसी उचित स्थान में कोई पानी का हौज़ वा तालाब आदि बनाना।

3 रोगी पशुओं की चिकितस के लिए आप कोई चिकित्सालय स्थापन करना अथवा ऐसे

काम में सहाय करना।

4 रोगी पशुओं के रोग निवारण के निमित्त कोई और सहाय करना।

5 परित्यक्त अथवा अनाथ पशुओं की रक्षा और पालना के लिए आप कोई पिंजरपोल स्थापन करना अथवा ऐसे काम में सहाय करना।

6 दुर्भिक्ष वा अकाल के समय दुर्भिक्ष-पीड़ित पशुओं की भी रक्षा और पालना करना अथवा किसी ऐसे काम में सहाय करना।

7 अपने किसी आश्रित वा अन्य पशु के किसी बुरे स्वभाव के दूर करने के लिए चेष्टा करना।

8 सुन्दर वा सेवाकारी पशुओं की जाति (नसल) विषयक उन्नति के लिए आप यत्न करना अथवा यथा अवसर ऐसे किसी काम में सहाय करना।

9 अपने विशेष-विशेष सेवाकारी पशुओं को स्मरण करके उनके शुभ के लिए कामना करना।

10 जिन-जिन पशुओं के प्रति किसी प्रकार का अत्याचार किया हो, उन्हें और उनके प्रति अपने दुष्कर्मों के स्मरण करके दुःखी होना और उचित परिशोध के द्वारा ऐसे विकार से अपने हृदय को पवित्र करना।

11 अपने सेवाकारी वा पालित पशुओं पर प्यार के भाव के साथ हाथ फेरना।

12 अपने सेवाकारी वा पालित पशुओं को किसी विशेष त्यौहार के दिन सुसज्जित करना और उन्हें कोई विशेष स्वादिष्ट किन्तु स्वास्थ्य आहार खिलाना। इत्यादि इत्यादि?

कुत्ते की वफादारी

अभी इन दिनों की बात है कि यूक्रेन के हॉस्टोमल में रहने वाली कैटरीना टायटोवा अपने पति और 2 बच्चों के साथ उस वक्त शहर छोड़कर भाग गई जब मार्च में रूसी सेना ने यहां हमला किया। मजबूरन उन्हें अपना कुत्ता 'बेली' वहीं छोड़कर जाना पड़ा। विनितसय में रह रहा परिवार 4 महीने बाद अपने घर लौटा। यह देखकर वह चौंक गए कि 'बेली' घर के आगे ही उनका इन्तज़ार कर रहा है। यह परिवार के लिए भावुक पल था।

एक कुत्ते की वफादारी का मनुष्य क्या मुकाबला कर सकता है, जो छोटे 2 लालच वा स्वार्थ में निकट से निकट सम्बन्धों में भी बेवफा बन जाता है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

खुशी के चार पल

सिक्ख गुरूवाणी में आता है "सन्त जनां हर जस गाईओ, कोट जन्म के दुख गंवाईओ" 19 जुलाई 2022 का दिन बड़ा भाग्यशाली था, जब बहुत अर्सा के बाद दो धर्म सम्बन्धी हमारे घर पधारे। कई दिनों से माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी आने की इच्छा प्रगट कर रहे थे। परन्तु जब उन्हें और ज्ञान चन्द जी को देखा तो मैं भाव विभोर हो गया। जिस श्रद्धा और सन्मान से वह मिले वह बहुत भावुक क्षण था। श्रीमान ज्ञान चन्द जी तो बहुत मना करने पर भी पैरों में गिर गए, वह कभी नहीं भूले कि गुरू के प्रभावों को उन तक पहुँचाने में मैं कुछ कील कांटा बना था। उनकी कृतज्ञता उनके भावों और जब कभी गोनियाना जाते थे, उनकी सेवा द्वारा प्रगट होती रही है।

उन दोनों धर्म सम्बन्धियों का हमारे घर में कदम रखना और घर में उनकी सेवा होती देखकर मैं धन्य धन्य हो गया।

श्रीमान बलबहादुर जी ने एक घटना बताई की वह एक जन के पास किसी की सहायता करने की प्रार्थना करना चाहते थे। वह जन उनका विद्यार्थी रहा है, इस समय वह राजनीति में बहुत अच्छी पोजीशन पर है और बहुत धन, माल का मालिक है। श्रीमान जी ने उसे दूसरी जगह से फोन किया कि मैं बलबहादुर सिंह बोल रहा हूँ और तुम्हें मिलना चाहता हूँ। उन्होंने बहुत तत्परता और उत्साह से जवाब दिया और कहा कि यह बताओ कि मैं आपके पास आऊं, या आप आ रहे हैं। उनके यह कहने पर कि मैं आ रहा हूँ, वह खुशी से भर गया, जब एक साथी के साथ उनके घर पहुँचे तो वह जैसे चाव से भर गया, जिस प्रकार उनका स्वागत किया, सेवा का वह बहुत सुन्दर नज़ारा था। जहां कृतज्ञता है, वहां अपने उस्ताद वा हितकर्ता के प्रति ऐसी घटनाएं पैदा होती हैं। फिर सहात्यार्थ गए जन का फोन नोट कर लिया और विश्वास दिलाया कि आप जब चाहें मुझे फोन कर सकते हैं और मुझे मिल सकते हैं।

घर में आकर और बातें करते हुए, श्रीमान जी ने हमें यह घटना बताई, जिसे सुनकर लगा कि दुनिया में ऐसे कृतज्ञ हृदय भी हैं, अपने उपकारियों को सताने की घटनाएं तो प्रति दिन मिलती हैं, परन्तु कृतज्ञता की घटनाएं बहुत 2 कम हैं। कुछ घण्टे हमारे पास धर्म सम्बन्धी ठहरे, इकट्ठे खाना खाया, फिर कुछ बातचीत के बाद हंस कर कहने लगे कि अब हम जाना माँगते हैं, सब हंसने लगे और खुशी - खुशी उन्हें विदा किया। उनके जाने के बाद भी दिल भावुक रहा, और यह बाणी "जित्थे मिले गुरू सिक्खड़ा, झुक 2 लांगू पाऐ" याद आई।

-बलदेव सिंह

सेवक उत्सव

खुशी की बात है कि इस वर्ष सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के संग्राम से मल्लेका में "सेवक" उत्सव 8 से 10 जुलाई तक मनाया गया। सारा प्रोग्राम बहुत उत्साहवर्धक रहा। बहुत प्रभावदायक वातावरण बना।

पहली सभा 8 जुलाई को शाम के 5 बजे रखी गई। जो प्रवेश सभा थी। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे। सभा का आरम्भ "शरण तुमरी मैं आया हूँ, बचाओ मुझको हे सत्गुरू।" भजन से हुआ। सभापति जी ने बताया कि देवात्मा को हम देवात्मा क्यों कहते हैं? उसकी व्याख्या की और दुनिया में जो मिथ्याचार फैला हुआ है, उसकी घटनाएं बताई।

फिर नेचर के नियमों के विषय में बताया कि नेचर की प्रत्येक घटना उसके नियमों के अनुसार होती है, उसकी उदाहरणें दी। सैर करने से सेहत बनना नियम है। ज़हर खाने से मृत्यु अवश्य है। बच्चे पैदा होने के भी नियम हैं। नेचर के नियम अटल हैं। धार्मिक यात्राओं में जाते हुए दुर्घटनाएं नियमों के अनुसार होती हैं, कोई देवता उन्हें टाल नहीं सकता। सेवकी की चार प्रकार की प्रतिज्ञाओं का वर्णन किया, जिनमें एक भाग दुराचारों के सम्बन्ध है। सभा बहुत ज्ञान वर्धक थी।

दूसरी सभा, 9.7.2022 - इस सभा में श्रीमान माहना सिंह जी की सेवाओं का वर्णन किया। श्रीमान मेहर सिंह जी, श्रीमान अजीत सिंह जी ने मन्दिर बनाने में जो संग्राम किया उसका वर्णन किया। श्रीमान जी ने बताया कि आज हम विशेष सेवकों को याद करेंगे। श्रद्धेया डॉक्टर प्रेम देवी जी, श्रद्धेय श्रीमान परमेश्वर दत्त जी की सेवाओं का भाव पूर्ण वर्णन किया।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी की अपने गुरू के प्रति समर्पण, स्कूल में प्रिंसीपल होकर रात को उठ 2 कर बच्चों की रजाईयां ठीक करना आदि विशेष सेवाओं का वर्णन किया।

सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी की सेवाओं का वर्णन किया, इनकी कल्याण तपभूमि रही है। माननीय श्रीमान गुरूबख्श सिंह जी ने उनको पापों से बचाने में बहुत सहायता की। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह मल्लेका में 4 बजे उठकर सबके भले के लिए तड़पते हुए मैंने देखा है।

इसके बाद और बहुत से उच्च धर्म सम्बन्धियों की सेवा का वर्णन किया।

9.7.2022, शाम 5 बजे :- सभापति श्रीमान बल बहादुर सिंह जी। इस सभा में भी श्रीमान जी ने और बहुत से उच्च जीवनधारियों के विषय में बताया, जिन पर समाज को और हम सबको गर्व है।

फिर श्रीमान सरताज सिंह जी ने श्रीमान अजीत सिंह जी की मन्दिर के प्रति सेवा, और श्रीमान जगीर सिंह जी ने बिमारी की हालत में भी सेवा की उसका वर्णन किया।

श्रीमान जगीर सिंह जी ने श्रीमान बलबहादुर जी, श्रीमान बलदेव सिंह जी की सेवाओं को बताया और यह भी बताया कि मैं इनकी लम्बी उम्र के लिए शुभ कामना करता हूँ। श्रीमान अजीत सिंह जी की सेवाओं का भी वर्णन किया

और कहा कि हम श्रीमान अजीत सिंह जी की सलाह लेकर काम करेंगे।

श्रीमान खेम चन्द जी ने, सुखदेव सिंह जी की सेवाओं का और श्रीमान मुन्शा सिंह जी की सेवाओं का भी वर्णन किया।

चौथी सभा 10.7.2022 की सुबह 9.00 बजे रखी गई सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। "अहो भाग्य सत्गुरू, तुम्हें मैंने पाया।" नामक भजन का गान किया गया।

सभापति जी ने बताया कि सेवकों के बीच रहते हमें उनकी क़दर नहीं होती, कहते हैं, "कीमत खो देता है, रोज़ का आना जाना" हमें बहुत कीमती सेवक दल मिला है, श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने 36 - बी का कैसे हाल बनवाया, कालिज बनाए "रूहानी इन्कलाब" आदि पुस्तकों को पंजाबी में अनुवाद करके छपवाया और भी कई अनुवाद किए और किताबें लिखी। बहुत कीमती लेख अब तक लिखे हैं। सारी उमर अपने नीच जीवन से मोक्ष पाने में लगे रहे। श्रीमान जी ने अहं अनुराग से जंग किया है और बहुत हद तक उस पर विजय पाई है। "नीच जीवन पर चिन्तन" नामक पुस्तक उनके अहं के प्रति संघर्ष की गाथा है। छोटे से छोटे व्यक्ति से क्षमा मांगी है।

साथी सेवकों के बीच रहते ही हम सुरक्षित हैं और जिन्दा हैं।

भाव प्रकाश

श्रीमान हरदेव सिंह जी – साथी सेवकों के साथ ग्रुप फोटो है, उन सब सेवकों के कारण ही मैं बचा हुआ हूँ। उन्होंने कुछ साथी सेवकों की घटनाओं का वर्णन किया।

श्रीमान गुरूदेव राज जी – सेवकों के साथ जुड़े रहने से लाभ ही लाभ प्राप्त हुए हैं। मैंने घर बनाना था। श्रीमान मेहर सिंह जी ने मुझे सलाह दी कि चौड़ी गली पर घर बनाओ। नक्शा भी उन्होंने ही बनवा कर दिया। उनकी बड़ी मेहरबानी है।

श्रीमान सुन्दर लाल जी – श्रीमान मेहर सिंह जी संगत के लिए प्रेरणा करते रहते हैं। यह अमीर आदमी हैं, उनके रुतबे को देखकर उनकी प्रेरणा से मैं 10 वर्ष संगत में आता रहा। अब जितना लाभ होता है, उसका ब्यान नहीं हो सकता। एक धर्म सम्बन्धी के साथ अपनी नराज़गी का ब्यान किया।

श्रीमति दविन्द्र जी – श्रीमान सुखदेव जी ने स्कूल बनाने में मदद की। मेरे बेटे को सम्भाला। श्रीमान अजीत सिंह जी ने लाक डाऊन में मुझे आटा भेजा। सरदूल सिंह जी की सेवाओं का जिकर किया। श्रीमान जगीर सिंह जी हमारी तरक्की के साथी हैं।

श्रीमान मोहन लाल जी – श्रीमान गोपाल जी की कृपा से, मैं इस संगत से जुड़ा। उनकी कृपा से नशों से बचा हूँ। सभी टेलर अफीम के आदि हो जाते हैं, गोपाल जी की कृपा से उससे निकल आया हूँ। उनकी कोई सेवा कर सका, उसकी खुशी है। सहायकारियों की सहायता वा सेवकों के सहयोग से प्रोग्राम बहुत अच्छा रहा। गुरू महाराज की अपार कृपा है, जिनके प्रभावों से ही यह सम्भव होता है। सेवकों की परस्पर एकता बढ़ी। तीन सत्संगों में कुल 10,100/- रुपये दान में प्राप्त हुए। आख़िर में गुरूदेव राज जी के इस मधुर भजन से "देवगुरू के सेवकों, मेरे प्यारे साथियों" से इस हितकर प्रोग्राम की समाप्ति हुई।

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

एक पत्र जसकरण सिंह ने लिख कर दिया :-

वैसे तो मेरे सारे ही श्रीमान जी उपकारी हैं, परन्तु श्रीमान अजीत सिंह जी ने मेरी मेरे मकान बनाने में सहायता करके बहुत बड़ा उपकार किया है, उन्होंने धन के रूप में और स्वयं की सेवा देकर मुझ पर बड़ा उपकार किया है। श्रीमान सरताज सिंह जी भी मेरे बहुत उपकारी हैं, उन्होंने मेरे मकान बनाने के लिए 50,000 रुपये बिना किसी लिखित पढ़त के दिए हैं। अब भी मैं उनके स्कूल में कार्यरत हूँ, मेरी बहुत सहायता करते रहते हैं। हर समय मेरा हाल चाल पूछते रहते हैं।

जैसे श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि प्रोग्राम महोत्सव की तरह ही प्रभावदायक रहा। सेवकों में उत्साह उनके हाव भाव से पता लगता था। गुरू महाराज की अपार कृपा है कि उनके प्रभाव शुष्क हृदयों को सरस कर देते हैं। श्रीमान जी ने बताया कि श्रीमान मेहर सिंह जी पहले से बहुत बेहतर हैं। यह जानकर बेहद खुशी हुई।

(एक हाज़रीन)

खुशख़बरी

हमारे पाठकों को यह जानकर बहुत खुशी होगी कि मल्लेका के मन्दिर को और सुन्दर रूप देने के लिए श्रीमान गुरूदेव राज जी ने एक लाख रुपया अपनी ओर से खर्च किया है, यह बहुत सराहनीय है -

हमें गर्व है कि नौजवान गौतम जी धर्म जीवन के लेखों में सहायता कर रहे हैं। मैं उनकी बहुत धन्यवादी हूँ। उनकी अध्ययनशीलता इन लेखों में झलकती हैं। माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी जिस उत्साह से सत्संग करवाते हैं और उन्होंने बताया कि ज्ञान चन्द जी भी उनके साथ जाते हैं और जाते रहेंगे। यह हम सब के लिए सौभाग्य की बात है। गर्मी की परवाह न करके मार्च से जुलाई तक तीन बहुत सबल सत्संग करवाए और 10,100 रूपये दान में प्राप्त किए।

ज़रूरी सूचना

आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस वर्ष सत्य धर्म बोध उत्सव मल्लेका में 23, 24, 25 सितम्बर को मनाया जाएगा। आशा है, आप चाव भाव से पहुँच कर इसे सफल करेंगे।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक*
*"धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts